ईशू दादीजी के प्रति श्रद्धांजलि

ईशू दादी यज्ञ के आदि रत्नों में से एक थीं। उनका आध्यात्मिक जीवन छोटी उम्र में , पाकिस्तान के दिनों से शुरू हुआ। वह सिंधी समुदाय के बच्चों में से थे, जो 30 के दशक की शुरुआत में बाबा के पास आए थे।

ईशू दादी का जीवन गहन आंतरिक ईमानदारी और शुद्धता से भरपूर था। उनकी ईमानदारी, स्वच्छता और परिपक्वता ने ब्रह्मा बाबा और मम्मा का विश्वास जीता। अपने अंतर्मुखी स्वभाव और गोपनीयता के उच्च स्तर के कारण, उन्होंने बाबा के निजी सहायक के रूप में कार्य किया और बच्चों से आने वाले रोज़ के पत्र व्यवहार में उनकी मदद की। आने वाले और भेजे गए पत्रों की पूरी जानकारी उन्हें रहती थी, फिर भी वह उसके बारे में किसी से वह कुछ नहीं कहती थीं। यह ऐसा था जैसे की वह अपनी स्मृति से सब कुछ पूरी तरह मिटा देती थीं, और सदा स्वच्छ और शुद्ध बनी रहती थीं।

ईशू दादी यज्ञ की पहली कोषाध्यक्ष / ख़ज़ांची थीं ,और उनकी यह भूमिका दीदीजी, दादीजी और दादी जानकी के नेतृत्व में जारी रही। यज्ञ में दिए गए हर एक पैसे को वह महत्व देती थीं और उसे एक आध्यात्मिक मुद्रा मानती थीं, जिसकी जवाबदेही बाबा की श्रीमत अनुसार दी जाती थी। कोषाध्यक्ष के रूप में, वह इतनी यथार्थ / सटीक थीं, कि उनकी उपस्थिति में बाबा और दादियां सदा बेफिक्र रहा करते थे। उनकी गुप्त उपस्थिति यज्ञ के सिद्धांतों और मर्यादाओं की अखंडता को बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली आधारशिला थी।

जब भी हम ब्रह्मा बाबा के कार्यालय में प्रवेश करते और ईशु दादी को डेस्क पर बैठे हुए देखते, तो राज़युक्त और योगयुक्त होने की चमक उनमे सदा दिखाई देती थी। अपनी शुद्ध और निर्दोष द्रष्टि से वह हमारा स्वागत करतीं, और मुस्कुराकर फिर हमारे बोलने का इंतजार करती थीं । उनकी उपस्थिति हमें आश्वस्त करती थी कि सब कुछ सार्थक तरीके से उपयोग किया जा रहा है। कम खर्च और वैभव ज़्यादा था। बाबा के भंडारे में जमा होने वाली हर बूंद में पवित्रता थी।

बापदादा ने ईशू दादी के ज़रिये एक बहुत ऊँची मिसाल हमारे सामने रखी है, जिससे की हम सब भी समझ सकें और उनकी तरह बन सकें ; ईमानदारी, स्वच्छता, विनम्रता और जवाबदेही की वह एक मिसाल थीं। उन्होंने अपने स्वरूप द्वारा सेवा करी, बोलकर नहीं। उनकी शान्ति शब्दों से कई गुणा अधिक शक्तिशाली थी ।

मोहिनी दीदी ,

अमेरिका और कैरेबियन की ओर से